प्रवेशांक

शोधामृत

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक मूल्यांकित शोध पत्रिका

Vol.-1; issue-1 (Jan-Jun) 2024

Page No.-48-52

©2024 Shodhamrit (Online)

www.shodhamrit.gyanvividha.com

**डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी**

सहायक आचार्य, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

Corresponding Author :

**डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी**

सहायक आचार्य, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

# विकास यात्रा: स्वतंत्रता पश्चात का भारत

**सारांश :-**

यह शोध पत्र 1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत की विकास यात्रा पर प्रकाश डालता है। यह आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, राजनीतिक स्थिरता और तकनीकी प्रगति तक फैले भारत के विकास पथ के बहुमुखी आयामों की जांच करता है। यह पेपर हरित क्रांति, आर्थिक उदारीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी उछाल जैसे प्रमुख मील के पत्थर पर प्रकाश डालता है, जिन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को आकार दिया है। यह सामाजिक विकास के अभिन्न घटकों के रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, महिला सशक्तिकरण और राजनीतिक स्थिरता में प्रगति की भी खोज करता है। इसके अतिरिक्त, पेपर अंतरिक्ष अन्वेषण और डिजिटल क्रांति में भारत की उपलब्धियों को महत्वपूर्ण तकनीकी प्रगति के रूप में रेखांकित करता है। इन उपलब्धियों को स्वीकार करते हुए, पेपर आय असमानता, गरीबी और पर्यावरणीय चिंताओं सहित लगातार चुनौतियों पर भी जोर देता है, जिन्हें भारत को सतत विकास के लिए संबोधित करना चाहिए। यह शोध पत्र भारत की स्वतंत्रता के बाद के विकास की व्यापक समझ में योगदान देता है और अधिक न्यायसंगत और समृद्ध भविष्य की दिशा में इसकी चल रही यात्रा में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

**मुख्य शब्द :- भारत, विकास, स्वतंत्रता**

**परिचय**

1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत की यात्रा उल्लेखनीय से कम नहीं रही है। दशकों की दृढ़ता, प्रतिरोध और दृढ़ नेतृत्व द्वारा चिह्नित स्वतंत्रता हमारे लिए गर्व के साथ हीआशा और प्रेरणा का भी प्रतीक है। भारत की आज़ादी महज़ औपनिवेशिक युग का अंत नहीं थी, बल्कि एक शुरुआत थी। इसे एक राष्ट्र रूप में आकार देने के लिए भी कितनी ही चुनौतियां आईं और कितनी आज भी मौजूद हैं।

पिछले सात दशकों में, देश में आर्थिक और सामाजिक विकास से लेकर राजनीतिक स्थिरता और तकनीकी प्रगति तक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। यह लेख स्वतंत्रता प्राप्त करने

के बाद भारत के बहुमुखी विकास की पड़ताल करता है और रास्ते में कुछ प्रमुख मील के पत्थर पर प्रकाश डालता है।

**आर्थिक विकास**

हरित क्रांति: भारत की स्वतंत्रता के बाद के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ों में से एक 1960 और 1970 के दशक में हरित क्रांति थी। फसलों की अधिक उपज देने वाली किस्मों, बेहतर सिंचाई और आधुनिक कृषि तकनीकों की शुरुआत के माध्यम से, भारत ने खाद्य आत्मनिर्भरता हासिल की, जिससे पुरानी भोजन की कमी दूर हो गई।

आर्थिक उदारीकरण: 1991 में, भारत ने आर्थिक उदारीकरण नीतियों की शुरुआत की, लाइसेंस राज को खत्म किया और अपनी अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजारों के लिए खोल दिया। इस कदम से विदेशी निवेश, तकनीकी प्रगति और तीव्र आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला। भारत की जीडीपी लगातार बढ़ी है, जिससे यह दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है।

सूचना प्रौद्योगिकी में उछाल: 1990 के दशक में भारत एक वैश्विक आईटी पावरहाउस के रूप में उभरा। कुशल इंजीनियरों और कम लागत वाले श्रम के साथ, भारतीय आईटी कंपनियों ने दुनिया को आउटसोर्सिंग सेवाएं प्रदान कीं। बेंगलुरु जैसे शहर तकनीकी नवाचार और सॉफ्टवेयर विकास का पर्याय बन गए।

**सामाजिक विकास**

शिक्षा और साक्षरता: भारत ने साक्षरता दर में सुधार पर जोर देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति की है। सर्व शिक्षा अभियान जैसी सरकारी पहलों से विशेषकर लड़कियों में स्कूल नामांकन और साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।

स्वास्थ्य सेवा: भारत ने जीवन प्रत्याशा में सुधार और शिशु मृत्यु दर में कमी के साथ स्वास्थ्य सेवा में प्रगति की है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल पहल के कार्यान्वयन ने इन सकारात्मक परिणामों में योगदान दिया है।

महिला सशक्तिकरण: स्वतंत्रता के बाद, भारत ने महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण प्रगति देखी है। कानूनी सुधारों, जागरूकता अभियानों और आर्थिक अवसरों ने समाज में महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

**राजनीतिक स्थिरता**

लोकतांत्रिक शासन: स्वतंत्रता के बाद से लोकतांत्रिक शासन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता अटूट रही है। देश ने नियमित, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराए हैं, जिससे सत्ता का शांतिपूर्ण परिवर्तन संभव हो सका है। इससे राजनीतिक स्थिरता आई है, जो भारत के विकास की आधारशिला है।

विदेश नीति: भारत की विदेश नीति इसे वैश्विक खिलाड़ी बनाने के लिए विकसित हुई है। यह कूटनीति में लगा हुआ है, रणनीतिक गठबंधन बनाया है और संयुक्त राष्ट्र और ब्रिक्स सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

**प्रौद्योगिकी प्रगति**

अंतरिक्ष अन्वेषण: भारत की अंतरिक्ष एजेंसी, इसरो ने अंतरिक्ष अन्वेषण में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। चंद्रमा और मंगल ग्रह पर क्रमशः सफल चंद्रयान और मंगलयान मिशन ने भारत को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशिष्ट देशों में शामिल कर दिया है।

डिजिटल क्रांति: इंटरनेट की व्यापक पहुंच और स्मार्टफोन के प्रसार के साथ भारत में डिजिटल क्रांति आई है। इससे न केवल लाखों लोग जुड़े हैं बल्कि डिजिटल अर्थव्यवस्था और ई-गवर्नेंस को भी बढ़ावा मिला है।

**भविष्य का मार्ग**

हालाँकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत ने उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है, फिर भी इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। आय असमानता, गरीबी, बुनियादी ढांचे की कमी और पर्यावरणीय मुद्दे महत्वपूर्ण चिंताएँ बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त, देश को सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक समावेशन, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देना जारी रखना चाहिए। हमें अपनी निम्न शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों और खतरों को जानना आवश्यक है।

**भारत की शक्तियां:**

एकता और विविधता: एकता और विविधता हमारे देश की प्रमुख शक्ति है। मज़बूत डोर से बंधी विविध सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक परिदृश्य हमारी राष्ट्रीय पहचान है।

कुशल नेतृत्व: हमारे देश में महात्मा गांधी से लेकर आज के प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी जैसे करिश्माई नेता हुए हैं, जिन्होंने देश के विकास को सही दिशा और प्रेरणा प्रदान की।

अंतरराष्ट्रीय समर्थन: स्वतंत्रता आंदोलन और उसके बाद हमारी उत्तरोत्तर प्रगति ने विश्व का ध्यान हमारी ओर खींचा।

मानव पूंजी: श्रम शक्ति हमारे देश की बहुत बड़ी शक्ति है।

आईटी और प्रौद्योगिकी: भारत एक वैश्विक आईटी केंद्र है, जो तकनीकी विकास में पूरी दुनिया में योगदान देता है।

कृषि उत्पादन: देश विभिन्न कृषि उत्पादों के दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है, यह न केवल खाद्य बल्कि देश की आर्थिक शक्ति भी है।

लोकतांत्रिक प्रणाली: स्टेबल लोकतांत्रिक प्रणाली राजनीतिक स्थिरता और सत्ता के शांतिपूर्ण परिवर्तन का आधार है।

**कमज़ोरियाँ:**

सामजिक विभाजन: सांप्रदायिक तनाव, जिस कारण भारत का विभाजन भी हुआ, राष्ट्रीय एकता के लिए चुनौती है।

आर्थिक चुनौतियाँ: भारत में अर्थोपार्जन हेतु स्वदेशीकरण व सुधारों की आज भी आवश्यकता है।

सीमित औद्योगीकरण: भारत के कुछ उद्योग वैश्विक मंच पर अपेक्षाकृत कम विकसित हैं।

आय असमानता: धन वितरण में असमानता से सामाजिक और आर्थिक असमानता पैदा हुई है।

बुनियादी सुविधाओं की चुनौतियाँ: परिवहन, बिजली और स्वच्छता सहित कुछ आधारभूत सुविधाओं में अपर्याप्तता हमारे विकास में बड़ी बाधा है।

शिक्षा और कौशल अंतर: प्रगति के बावजूद, कौशल विकास के समानांतर चलती बेहतर गुणवत्तायुक्त शिक्षा की आवश्यकता है।

चिकित्सकीय पहुंच: सस्ती जेनेरिक दवाओं के होते हुए भी सभी को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सकीय पहुंच एक चुनौती बनी हुई है।

पर्यावरणीय चिंताएँ: प्रदूषण, पानी की कमी और अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन पर्यावरणीय मुद्दों में योगदान करते हैं।

क्षेत्रीयता की भावना: क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता कुछ मतभेदों को भी जन्म देती है जो नीति कार्यान्वयन में बाधा डालते हैं।

**अवसर:**

आर्थिक आत्मनिर्भरता: अपनी जनसंख्या को मानव संसाधन में बदल कर हम अपने स्वयं के उद्योगों को विकसित कर सकते हैं और आत्मनिर्भर हो सकते हैं।

सामाजिक सुधार: स्वतंत्रता आंदोलन ने महिलाओं के अधिकारों और जाति-आधारित भेदभाव सहित सामाजिक सुधारों की नींव रखी। यह उत्तरोत्तर उन्नत भी होता जा रहा है।

शैक्षिक विकास: राष्ट्र बौद्धिक विकास और नवाचार को बढ़ावा देने हेतु शिक्षा और अनुसंधान में और निवेश कर सकता है।

सूचना प्रौद्योगिकी: आईटी विशेषज्ञता का लाभ उठाकर, भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था में नवाचार और नेतृत्व कर सकता है।

रिन्यूएबल एनर्जी: रिन्यूएबल एनर्जी स्रोतों से बिजली की कमी और पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

चिकित्सा पर्यटन: चिकित्सा पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए देश की चिकित्सा विशेषज्ञता का लाभ उठाया जा सकता है।

नवाचार और स्टार्टअप: नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहित करने से आर्थिक विविधीकरण और रोजगार सृजन को बढ़ावा मिल सकता है।

पर्यटन: भारत की समृद्ध संस्कृति, इतिहास और प्राकृतिक सुंदरता पर्यटन उद्योग के लिए महत्वपूर्ण संभावनाएं प्रदान करती है।

**भारत के लिए खतरे:**

सुरक्षा संबंधी चिंताएँ: क्षेत्रीय संघर्ष और आतंकवाद सुरक्षा के लिए खतरा हैं। स्वतंत्रता के समय हुए विभाजन और सांप्रदायिकता से भी सुरक्षा संबंधी खतरे उत्पन्न हुए हैं।

जनसंख्या दबाव: तीव्र जनसंख्या वृद्धि से सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ पैदा हो रही हैं।

महामारी: नई बीमारियों और महामारियों का उद्भव स्वास्थ्य प्रणालियों पर दबाव डालता है।

जलवायु परिवर्तन: भारत मौसम परिवर्तन और समुद्र के बढ़ते स्तर सहित जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति संवेदनशील है।

सामाजिक असमानताएँ: सामाजिक असमानताओं और भेदभाव को संबोधित करने के लिए आज भी प्रयासों की आवश्यकता है।

बाहरी दबाव: अन्य शक्तिशाली राष्ट्र भारत के विकास और नीतियों पर प्रभाव डाल सकते हैं।

वैश्विक आर्थिक कारक: प्रमुख वैश्विक बाजारों में आर्थिक मंदी भारत के निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती है।

उपर्युक्त चुनौतियों और खतरों से निपटने के लिए हम सभी भारतीयों के सामूहिक प्रयास और भागीदारी की आवश्यकता है। आवश्यकता है कि हम एकता और विविधता को बढ़ावा दें, भारत में संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों की विविधता का सम्मान करें, चुनावों में वोट बिना सोचे न दें, स्वयं और परिवार को शिक्षित बनाएं, सामाजिक न्याय और समानता का समर्थन करें, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दें, कौशल विकास, उद्यमिता, ऊर्जा संरक्षण व स्वच्छता अभियान के साथ-साथ वृक्षारोपण और पर्यावरण के प्रति जागरूक बनें, यदि विरोध आवश्यक है तो शांतिपूर्ण तरीके से करें। इन सभी के अतिरिक्त भी कई कार्य ऐसे हैं, जो किए जाने आवश्यक हैं, जैसे,

- बीमारियों की रोकथाम के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता और स्वच्छता को बढ़ावा देते हुए, वंचित समुदायों को चिकित्सा सहायता प्रदान करने में सहायता करें।
- डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर और वंचित क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान कर डिजिटल विभाजन को पाटने में मदद करें।
- सटीक जानकारी प्रसारित करने और गलत सूचना का प्रतिकार करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी से करें।
- नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान पहलों में योगदान करें।
- सुरक्षा हेतु कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ सहयोग करें और सतर्क रहें।

याद रखें कि व्यक्तिगत प्रयास सामूहिक रूप से सामाजिक परिवर्तन का कारण बनते हैं। इन कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल होकर, भारतीय नागरिक चुनौतियों पर काबू पाने और राष्ट्र के लिए बेहतर भविष्य के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षतः, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत की विकास यात्रा लचीलेपन, प्रगति और परिवर्तन की एक प्रेरक कहानी रही है। राष्ट्र ने आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, राजनीतिक स्थिरता और तकनीकी प्रगति में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालाँकि, इसे अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ भविष्य के निर्माण के लिए चल रही चुनौतियों से भी निपटना होगा। भारत की आगे की राह निस्संदेह चुनौतीपूर्ण है, लेकिन इसका इतिहास दर्शाता है कि इसमें बाधाओं को दूर करने और अपने उल्लेखनीय विकास पथ को जारी रखने की क्षमता है।

**सन्दर्भ सूची :-**


1. गुप्ता, सुभाष चंद्र. (2012). आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास: 1947 से 2010 तक. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. ड्रेज़, जीन, और अमर्त्य सेन. (2013). अन अनसर्टेन ग्लोरी: इंडिया एंड इट्स कॉन्ट्राडिक्शंस. लंदन: पेंगुइन बुक्स.
3. मिश्रा, बी. एन. (2005). भारत का समाजिक और आर्थिक विकास: स्वतंत्रता के बाद की चुनौतियां. पटना: साहित्य भवन.

4. सेंगुप्ता, मनीषा. (2018). विकास और विकासशील भारत: एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण. वाराणसी: ज्ञान गंगा पब्लिशर्स.
5. तागड़े, आर. डी. (2016). भारतीय अर्थव्यवस्था: स्वतंत्रता से वर्तमान तक. मुंबई: एशियन एजुकेशनल पब्लिशर्स.
6. जयराम, जयराम. (2021). विकास के पथ पर: भारत की राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज में परिवर्तन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. खान, सईद, और शमा सुल्तान. (2014). भारत की शिक्षा नीति और विकास के 50 वर्ष. हैदराबाद: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
8. रामचंद्र गुहा. (2007). इंडिया आफ्टर गांधी: द हिस्ट्री ऑफ़ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. लंदन: पेंगुइन यूके.
9. कौशिक, राजीव. (2019). भारत के आर्थिक सुधार: एक विस्तृत अध्ययन. चंडीगढ़: एस.आर. पब्लिकेशन्स.
10. भगवती, जगदीश, और अरविंद पानगढ़िया. (2012). इंडियाज़ ट्रिस्ट विद डेस्टिनी: डिबेट्स ऑन इकनॉमिक रिफॉर्म्स. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स.
11. Sharma, Vikrant. Dr Parshuram Shukla Bihari Ji Ke Samagra Sahitya Ka Aalochnatmak Anushilan. BFC Publications, 2023.
12. गुप्त, and संजय. "स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में संसदीय लोकतंत्र: देश को आगे ले जाने के लिए पक्ष-विपक्ष की बननी चाहिए साझी जिम्मेदारी." (2021).
13. वीरेश कुमार पाण्डेय, and लेखराम डेहरिया. "महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति: राजनैतिक सशक्तिकरण के परिपेक्ष्य में (सिवनी जिले के विशेष संदर्भ में)." International Journal of Reviews and Research in Social Sciences 8.3 (2020): 153-160.
14. सोलंकी, राकेश कुमार ;2020; आत्मनिर्भर भारत रोजगार और भारतीय अर्थब्यवस्था पर इसके प्रभाव, Juni Khyat, Vol.-10, Issue-7 No.14, July 2020
15. Pradhan, Ram Chandra. Raj se Swaraj: Bestseller Book by Ram Chandra Pradhan: Raj se Swaraj. Prabhat Prakashan, 2021.
16. Solanki, Rajendra Singh. "Contribution of Gandhi Philosophy in Rural Development of India: Evaluation: भारत के ग्रामीण विकास में गाँधी दर्शन का योगदान: मूल्यांकन." RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 7.7 (2022): 132-136.
17. Agnihotri, Kuldeep Chand. Bharatbodh Ka Sangharsh, 2019 Ka Mahasamar. Prabhat Prakashan, 2020.
18. अर्चना सेठी, and बी एल सोनेकर. "भारतीय अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भर भारत." International Journal of Advances in Social Sciences 8.4 (2020): 191-195.
19. Singh, Ajay Pal. Ancient India. BFC Publications, 2022.
20. Schipke, Alfred, et al. "भारत की वित्तीय प्रणाली: सशक्त और दीर्घकालिक विकास के लिए आधार निर्मित करना." भारत की वित्तीय प्रणाली. International Monetary Fund, 2023.
21. प्रधान अनूप एवं ऋचा सिंघल ;2020; कोरोना आर्थिक सामाजिक चुनोतियां एवं आर्थिक विकास एक परिदृष्य
22. डॉ. भूपेन्द्र सिंह. "भारत के आर्थिक विकास में मानवीय मूल्यों की भूमिका का समीक्षात्मक अध्ययन." JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCES, OPERATION & STRATEGIES 4.2 (2020): 39-43.

---